

लोग हमसे कहते हैं आगे बढ़ो दुनिया कहाँ जा रही है ? हम कहते हैं चलो 1400 साल पहले चलते हैं। अहद-ए-नबवी की ठंडक लेने की कोशिश करते है तरक्की वहीं से मिलेगी। Let us go before 1400 years.

Monday, August 24, 2020

بِسُمِ اللهِ الرَّحُلْنِ الرَّحِيْمِ

Publication S.N: 00000138

تعظيمارشادرسولصلىالله تعالى عليه وأله وسلم

حضرت اساء رضی اللہ تعالی عنھا بڑی تنی تھیں۔ اول جو کچھ خرچ کرتی تھیں اندازہ سے ناپ تول کرخرچ کرتی تھیں مگرجب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ باندھ باندھ کرنہ رکھا کرواور حساب نہ لگا یا کرو جتنا بھی قدرت میں ہو خرچ کیا کرو تو پھر خوب خرچ کرنے لگیں۔ اپنی بیٹیوں اور گھر کی عور توں کو تفیحت کیا کرتی تھیں کہ اللہ عزو جل کے راستے میں خرچ کرنے اور صدقہ کرنے میں ضرورت سے زیادہ مونے اور بچنے کا انتظار نہ کیا کرو کہ اگر ضرورت سے زیادتی کا انتظار کرتی رہوگی تو ہونے کا ہی نہیں (کہ ضرورت خود بڑھتی رہتی ہے) اور اگر صدقہ کرتی رہوگی تو صدقہ میں خرچ کردیئے سے نقصان میں نہ ہوگی۔

(الطبقات الكبرى، ج٨، ص١٩٨)

ताज़ीम-ए-इरशाद-ए-रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

हज़रत अस्मा रिदयल्लाहु तआला अन्हा बड़ी सख़ी थीं। अव्वल जो कुछ ख़र्च करती थीं अंदाज़े से नाप तौल कर ख़र्च करती थीं मगर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बांध बांध कर ना रखा करो और हिसाब ना लगाया करो जितना भी क़ुदरत में हो ख़र्च किया करो तो फिर ख़ूब ख़र्च करने लगीं। अपनी बेटीयों और घर की औरतों को नसीहत क्या करती थीं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के रास्ते में ख़र्च करने और सदक़ा करने में ज़रूरत से ज़्यादा होने और बचने का इंतिज़ार ना किया करो कि अगर ज़रूरत से ज़्यादती का इंतिज़ार करती रहोगी तो होने का ही नहीं (कि ज़रूरत ख़ुद बढ़ती रहती है और अगर सदक़ा कुरती रहोगी तो सदक़े में ख़र्च कर देने से नुक़्सान में ना रहोगी।

तबक़ातुल क़ुबरा, जिल्द-8, स.198

सहाबा-ए-किराम का इश्क़-ए-रसूल, स.64